आमोद कारखानिस

करामाती कागज़

छेद है पर छेद नहीं

मैंने कागज़ से एक पुँगी बनाई। वैसी ही पुँगी जिसमें मूँगफली वाला मूँगफली देता है। इसके बाद उसकी चोंच को काटकर एक छोटा-सा छेद बना दिया। फिर दोस्त को बुलाकर पूछा, क्या सोचते हो इसमें पानी ठहरेगा या बह निकलेगा?

मज़ाक कर रहे हो मियाँ। एक तो कागज़ और उस पर नीचे यह छेद। पानी तो बिला शक बह जाएगा। तो शर्त लगा लो।

अबकी बार उस तरफ चुप्पी छा गई।

जितनी देर वे सोचने में लगाते हैं तुम खुद ही क्यों नहीं करके देख लेते?

एक बोतल का दो-तिहाई हिस्सा पानी से भर दो। अब उसके खुले मुँह पर पुँगी रख दो। पुँगी बोतल पर अच्छी तरह से फिट हो गई हो इसका ख्याल ज़रूर रखना। अब वक्त है पुँगी में पानी भरने का। फिर से ख्याल रखना कि पानी पुँगी के बाहरी हिस्से तक छलक न आए। पानी बोतल में गिरने लगेगा। लेकिन कुछ देर बाद पुँगी में पर्याप्त पानी होने के बावजूद पानी गिरना बन्द हो जाएगा।

क्यों भला?

वैसे यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। तुमने पहले भी देखा होगा कि कीप से बोतल में पानी डालते वक्त कीप को थोड़ी-थोड़ी देर में उठाना पड़ता है। यहाँ भी कुछ ऐसा ही मामला है।

कीप बोतल के मुँह पर अच्छी तरह से फिट है। इसलिए बोतल की हवा किनारों से बाहर नहीं निकल सकती है। कीप में पानी डालने पर वो नीचे बोतल में पहुँचता है जहाँ पहले हवा थी। इससे बोतल में वायु-दाब बढ़ जाता है। हवा निकलने की कोई जगह भी नहीं है। जब बोतल में वायु का दाब इतना बढ़ जाता है कि वो कीप में भरे पानी का वज़न उठा सके तो पानी गिरना बन्द हो जाता है।

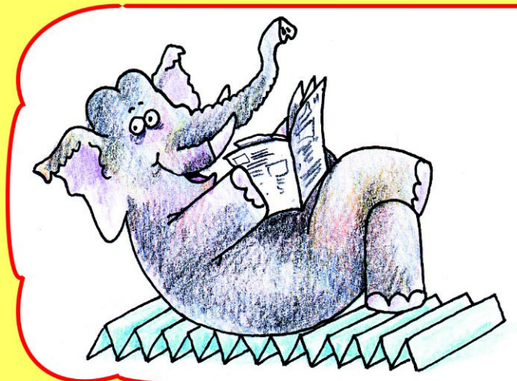

कागज़-सा मज़बूत!

अरे सम्भाल के... कागज़ है फट जाएगा। यह जुमला तुमने अक्सर सुना होगा। पर मैं इसे नहीं मानता।

कागज़ को बगल में दिखाए तरीके से मोड़ लो। अब इस पर एक किताब रखो। फिर दूसरी, फिर तीसरी। इस तरह किताबें बढ़ाते जाओ। हैरान हो गए?

न जलने वाला कागज़!

उस दिन तो मुझे लोगों ने सिरफिरा समझ ही लिया था जब मैंने कागज़ में पानी उबालने की बात कही थी। वो तो मौका और हालात ऐसे थे कि मैं अपनी कही बात सही साबित कर पाया। वरना तो...।

बीच जंगल में ठण्ड की रात हम आग ताप रहे थे। तभी हमें चाय की तलब लगी। चाय की पत्ती, चीनी और पानी तो था पर बर्तन न था। तब मैंने कागज़ में पानी उबालने की पेशकश की। आगे क्या हुआ यह तो तुम समझ सकते हो। खैर, तुम भी कोशिश करो।

आग का मामला है पर ज़रा सम्भलकर तुम भी इसे करके देख सकते हो। किसी बड़े का साथ हो तो अच्छा है। कागज़ को इस तरह मोड़ो कि एक बरतन-सा बन जाए। इसमें थोड़ा-सा पानी डाल लो। अब इसे आग के ऊपर रखो। इस तरह कि कागज़ का वही हिस्सा आग के सम्पर्क में रहे जिसमें पानी है। तुम देखोगे कि कागज़ तो जला नहीं हाँ, पानी ज़रूर गरम हो गया।

क्यों भला?

कागज़ को कुछ देर गरम करने पर वो जलने लगता है। लेकिन पानी भरे कागज़ को गरम करने पर ताप कागज़ के ज़रिए पानी तक पहुँचता जाता है। इससे पानी गरम होने लगता है। और कागज़ को उतना ताप ही नहीं मिल पाता कि वो जलने लगे।

एक मज़ेदार बक्सा

कागज़ की तीन पट्टियाँ काट लो। इन्हें मज़बूत बनाने के लिए इन पीछे कार्ड शीट चिपका लो। एक पट्टी को चार बराबर भागों में मोड़ लो। चित्र में दिखाए तरीके से पट्टियों पर कोई डिज़ाइन बना लो। पहली पट्टी से एक चौकोर छल्ला-सा बनाकर उसके दोनों छोरों को सेलो टेप या गोंद से चिपका दो।

दूसरी और तीसरी पट्टी को भी चित्र में दिखाए तरीके से एक दूसरे में फँसा लो।

अब छल्लों को घुमा-घुमाकर क्या तुम एक ऐसा घन बना सकते हो जिसके सभी तरफ डिज़ाइन बना हो।